पंचम अध्याय

शोधसार, निष्कर्ष

एवं सुझाव

अध्याय –V

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.0 भूमिका :

सारांश किसी भी अध्ययन को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है। जिसके द्वारा अध्ययन को संक्षिप्त व सरल रूप में समझा जा सके। इसे शोध प्रतिवेदन या शोध रिपोर्ट भी कहा जाता है। प्रतिवेदन का कार्य अनुसंधान का अंतिम, किन्तु सबसे महत्वपूर्ण चरण माना जाता है। अध्ययनकर्ता का विषय समस्या से संबंधित तथा अध्ययन के उददे्श्यों के अनुरूप समग्र से निदर्श का चयन करके जो तथ्य एवं जानकारियों का संग्रह करता है, उन्हें वर्गीकृत करके सारणियों में या वृतान्त के रूप में संजोकर रखने के पश्चात् उनका सूक्ष्मता से परीक्षण एवं पृथक्करण करके उन पर निष्कर्ष स्वरूप प्रतिवेदन या रिपोर्ट तैयार करता है। इस प्रकार प्रतिवेदन शोधकर्ता के समस्त अध्ययन का सार कहा जा सकता है जिसमें अध्ययन के प्रारंभिक चरण से लेकर अंतिम चरण तक की समस्त महत्वपूर्ण व सारगर्भित क्रियाओं का तथ्यात्मक विवेचन होता है।

प्रतिवेदन लेखन के अभाव में अनुसंधान पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। अध्ययन चाहे सामाजिक हो या मनोवैज्ञानिक, शैक्षणिक या अन्य किसी पक्ष से संबंधित हो, प्रतिवेदन लेखन सभी प्रकार के शोध का अंतिम चरण स्वीकारा गया है। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रतिवेदन लेखन वह विशिष्ट कार्य है, जिसके अभाव में तथ्यों का, सूचनाओं का या जानकारियो का निष्कर्ष व अध्ययन उददे्श्य पूर्ण नहीं हो सकते।

प्रतिवेदन लेखन को तैयार करना कोई सरल कार्य नहीं है और न ही उसे अपनी स्वेच्छानुसार ही तैयार किया जाना चाहिए, बल्कि प्रतिवेदन

लेखन में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं का आधार मानकर ही कार्य करना चाहिए। प्रतिवेदन का उददे्श्य व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों दृष्टियों से है। प्रतिवेदन से समाज के नवीन ज्ञान की प्राप्ति तो होती है, साथ ही उस व्यक्ति को आत्मसंतोष होता है, जो अनुसंधान करके समाज के, व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि करना चाहता है।

प्रतिवेदन या शोध सारांश मनुष्य के ज्ञान को विस्तृत करने में सहायक होता है। इस प्रकार प्रतिवेदन ज्ञान को संग्रहित करने की दृष्टि से किया किया जाता है। प्रतिवेदन का उददे्श्य उपयोगितावादी समाज में अन्य लोगों को ज्ञान देना है। प्रतिवेदन ज्ञान को नष्ट हो जाने से बचाता है। ज्ञान की सामाजिक विरासत बनाना और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को ज्ञान हस्तान्तरित करने के उद्देश्य से प्रेरित होकर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाता है। प्रतिवेदन अनुसंधान से प्राप्त निष्कर्षो को उन लोगों तक पहुँचाता है जो इसमें रूचि रखते हैं तथा इसके कारणों और परिणामों को जानना चाहते है। प्रतिवेदन अध्ययन वस्तु में अन्तर्निहित तथ्यों की वास्तविक स्थिति का ज्ञान कराते हैं तथा इनकी सहायता से अनुसंधान की वैधता की जांच करना सरल हो जाता है।

शोधकर्ता ने इस अध्याय में **''कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों का पाठ्यपुस्तकीय तथा संदर्भीय ज्ञान–एक अध्ययन''** लघु शोध का शोध प्रतिवेदन के रूप में सारांश एवं अध्याय चतुर्थ में दिये गये प्रदत्तों एवं जानकारी के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष एवं व्याख्या को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही इस अध्ययन के आगे संदर्भ में विभिन्न क्षेत्रों में आगे अध्ययन करने के लिए सुझाव एवं शोधकर्ता के मस्तिष्क में शोधकार्य दौरान उठे अध्ययन संबंधी प्रश्नों को दर्शाया है।

पाठ्यपुस्तकीय तथा संदर्भीय ज्ञान की प्रकृति क्या है? संदर्भीय ज्ञान को पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान से विद्यालयों में जोड़ा जाता है? ऐसे कई प्रश्नों शोधकर्ता के मन में अध्ययन दौरान प्राप्त जानकारी विश्लेषण द्वारा उद्‌भवे उसे इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

5.1 अध्ययन के उददेश्य :

''कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों का पाठ्यपुस्तकीय तथा संदर्भीय ज्ञान–एक अध्ययन''

1. कक्षा आठवीं के स्थानांतरित विद्यार्थियों का पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान का अध्ययन करना।
2. कक्षा आठवीं के अन्य विद्यार्थियों का पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान का अध्ययन करना।
3. कक्षा आठवीं के स्थानांतरित विद्यार्थियों का संदर्भीय ज्ञान को ज्ञात करना।
4. कक्षा आठवीं के अन्य विद्यार्थियों का संदर्भीय ज्ञान के बारे में जानना।
5. कक्षा आठवीं के स्थानांतरित तथा अन्य विद्यार्थियों का पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान में अंतर ज्ञात करना।
6. कक्षा आठवीं के स्थानांतरित तथा अन्य विद्यार्थियों का संदर्भीय ज्ञान में अंतर ज्ञात करना।

5.2 अध्ययन प्रश्नों :

1. क्या स्थानांतरित एवं अन्य विद्यार्थियों में पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान में कोई अंतर है?
2. क्या स्थानांतरित एवं अन्य विद्यार्थियों के संदर्भीय ज्ञान में कोई अंतर है?

3. स्थानांतरित विद्यार्थियों के पाठ्यपुस्तकीय तथा संदर्भीय ज्ञान में क्या अंतर है ?

4. अन्य विद्यार्थियों के पाठ्यपुस्तकीय तथा संदर्भीय ज्ञान में क्या अंतर है ?

5. स्थानांतरित विद्यार्थियों में संदर्भीय ज्ञान ज्यादा हैं ? कौनसा व संदर्भीय ज्ञान है, जो विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान से जोड़ पाते हैं ?

6. स्थानांतरित एवं अन्य विद्यार्थियों जो ज्ञान प्राप्त करता हैं, यह ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया में कोई अंतर है ?

7. स्थानांतरित एवं अन्य विद्यार्थियों के ज्ञान का स्तर तथा ज्ञान की प्रकृति में कोई अंतर है ?

5.3 न्यादर्श :

प्रस्तुत शोधकार्य पोरबंदर शहर के बोखिरा क्षेत्र से जहाँ ज्यादातर स्थानांतरित खारवा जाति के विद्यार्थियों तथा अन्य विद्यार्थियों विद्यालय में अध्ययन हेतु आते हैं। इन बोखिरा क्षेत्र की "श्री कस्तुरबा प्राथमिक विद्यालय" के कक्षा आठवीं के कुल 20 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में उददे्श्यपूर्ण प्रकार, यादृच्छिक रूप से चयनित किये गये थे। जिसमें 10 स्थानांतरित तथा 10 अन्य विद्यार्थियों को शोधकर्ता हेतु शामिल किये गये थे।

5.4 उपकरण :

संबंधित अध्ययन के लिए प्राप्त प्रदत्तों एवं जानकारी के संकलन हेतु चार प्रकार के उपकरणों का उपयोग किया गया था।

1. निर्धारित समूह चर्चा (Focus Group Discussion)
2. सहभागी अवलोकन (Participant Observation)

3. असंरचित साक्षात्कार (Unstructured Interview)

4. सत्रांत गुणपत्रक

1. निर्धारित समूह चर्चा :

स्थानांतरित तथा अन्य विद्यार्थियों का संदर्भीय ज्ञान तथा पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान जानने हेतु विद्यार्थियों का निर्धारित दो समूह बनाकर विद्यालय में तथा परिवेश में जाकर निर्धारित संदर्भ विषय पर एक साथ सभी विद्यार्थियों को बारी-बारी प्रश्नों पूछकर, विद्यार्थियों के साथ बैठकर चर्चा करके जानकारी को प्राप्त किया था।

2. सहभागी अवलोकन :

स्थानांतरित खारवा जाति के विद्यार्थियों का संदर्भीय ज्ञान तथा दोनों प्रकार के विद्यार्थियों विद्यालय में ज्ञान कैसे प्राप्त करते हैं, सीखने की प्रक्रिया तथा विद्यालयीन प्रवृत्ति के बारे में जानकारी सहभागी अवलोकन द्वारा प्राप्त की गई थी। साथ में स्थानांतरित विद्यार्थियों को समुद्र तट पर तथा आस-पास के परिवेश में ले जाकर सहभागी अवलोकन तथा समूह चर्चा करके जानकारी प्राप्त की गई थी।

शोधकर्ता ने सहभागी अवलोकन दरम्यान फोटोग्राफ तथा वीडियोक्लीप्श द्वारा विद्यार्थियों की क्रिया जानने का प्रयास किया।

3. असंरचित साक्षात्कार :

स्थानांतरित तथा अन्य विद्यार्थियों के बारे में विद्यालय के विभिन्न विषयों के शिक्षक, विद्यालय के संचालक तथा अन्य व्यक्तियों से विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया तथा विद्यार्थियों के बारे में अन्य जानकारी शोधकर्ता ने असंरचित साक्षात्कार द्वारा जानकारी प्राप्त की गई थी।

5.5 प्रदत्तों/वृत्तांत का विश्लेषण :

प्रस्तुत शोध कार्य संख्यात्मक तथा गुणात्मक स्वरूप का था जिसमें प्राप्त प्रदत्तों तथा जानकारी का विश्लेषण निम्न प्रकार से किया गया था।

स्थानांतरित एवं अन्य विद्यार्थियों के पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान के बारे में जानने हेतु प्राप्त सत्रांत गुणकपत्रक के द्वारा विभिन्न विषयों के गुणांक रूप में प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु औसत प्रतिशत सांख्यिकी का उपयोग किया गया था।

स्थानांतरित एवं अन्य विद्यार्थियों के संदर्भीय ज्ञान के बारे में जानने हेतु प्राप्त जानकारी को वृत्तांत के रूप में लिखकर तथा विद्यार्थियों की क्रिया फोटोग्राफ्स तथा वीडियोक्लीप्स द्वारा देखकर गुणात्मक रूप से पृथक्करण किया गया था।

5.6 अध्ययन के परिणाम :

1. स्थानांतरित एवं अन्य विद्यार्थियो के पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान के संदर्भ में विभिन्न विषयों के गुणांक का औसत प्रतिशत में ज्यादा अंतर नहीं है। दोनों विद्यार्थियों के गुणांक का औसत प्रतिशत सामान्य संभावना वक्र के आधार पर कम है।
2. स्थानांतरित विद्यार्थियों के पास संदर्भीय ज्ञान के रूप में समुद्र के बारे में– समुद्री प्राणी, समुद्री वनस्पति, बोंट, मच्छी, समुद्री लहर, समय, दिशा आदि का परिवेशीय ज्ञान है। जबकि अन्य विद्यार्थियों में ज्यादातर कृषि व्यवसाय से जुड़े होने के कारण कृषि संबंधि, भिन्न–भिन्न फसलें, कृषि औजार, कृषि प्रक्रिया, पशु संबंधी, डेरी उद्योग, वनस्पति आदि का परिवेशीय ज्ञान है। इनके अलावा अन्य बच्चों के पास अपना परिवेशीय ज्ञान है। अतः दोनों प्रकार के विद्यार्थियों के संदर्भीय ज्ञान में क्षेत्रों के आधार पर अन्तर है।

3. स्थानांतरित विद्यार्थियों का पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान विभिन्न विषयों के गुणांक के संदर्भ में 50.3 औसत प्रतिशत है, लगभग 50 प्रतिशत। जबकि संदर्भीय ज्ञान में परिवेशीय समुद्री ज्ञान, समुद्री वनस्पति, बोट, मच्छी, आदि का पूर्ण रूप का ज्ञान है। जो पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान से कुछ हद तक अच्छा है।

4. अन्य विद्यार्थियों का पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान विभिन्न विषयों के गुणांक के संदर्भ में 38.7 औसत प्रतिशत है। 50 प्रतिशत से भी कम। स्थानांतरित विद्यार्थियों के पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान से भी कम। जबकि संदर्भीय ज्ञान में परिवेशीय कृषि संबंधी, फसलें, कृषि औजार, कृषि प्रक्रिया, वनस्पति आदि का पूर्णरूप का ज्ञान है। जो पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान से कुछ हद तक अच्छा है।

5. स्थानांतरित विद्यार्थियों में पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान की तुलना में समुद्री विषयक ज्ञान कुछ हद तक ज्यादा है। परिवेश से आने वाला समुद्री ज्ञान जैसे कि – मच्छी, बोट, समुद्री वनस्पति, समुद्री प्राणी, समुद्री लहर, समय, दिशा, मच्छी पकड़ने से कम्पनी में जाने तक की प्रकिया आदि। इनमें से बहुत कम मुद्दे जो कक्षा 8वीं के विभिन्न विषयों में टूकड़ों के रूप में है। यह ज्ञान परिवेश से प्राप्त करते हैं। उनका सीखने का तरीका भी पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान से भिन्न पाया गया। जैसे कि पाठ्यपुस्तक में होकायंत्र, समुद्री लहर, समुद्री वनस्पति के बारे में जो ज्ञान प्राप्त करते है। किया उनसे संदर्भीय ज्ञान में यहीं बातें भिन्न तरीकों से जानते हैं।

6. स्थानांतरित एवं अन्य विद्यार्थियों विद्यालय में पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान विभिन्न विषयों के शिक्षक की सीखाने की पद्धति से प्राप्त करता है। लेकिन स्थानांतरीत विद्यार्थियों अपना परीवेशीय संदर्भीय ज्ञान क्रिया

Regional Institute of Education LIBRARY

करके, अनुभव से, अनजाने में, सोच के आदि तरीकों से आनंद के साथ प्राप्त करता है। इसी तरह अन्य विद्यार्थियों का अपना परीवेशीय संदर्भीय ज्ञान अनुभव से, सुनके, क्रिया करके आनंद के साथ प्राप्त करता है। अतः पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान विद्यार्थियों विद्यालय में पढ़के, रटके, शिक्षकों की सिखाने की पद्धति से समाचार या जानकारी के रूप में विभिन्न विषयों के टुकड़ों में डर के साथ प्राप्त करते हैं। जबकि, संदर्भीय ज्ञान स्वयं क्रिया करके अनुभव से, अनजाने में, क्रिया करते समय आनन्द के साथ पूर्ण रूप से प्राप्त करते हैं।

5.7 निष्कर्ष एवं व्याख्या :

प्रस्तुत शोधकार्य दौरान यह पता चला कि स्थानांतरित एवं अन्य विद्यार्थियों का पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान कम है। विद्यार्थियों विद्यालय में सुनके, रटके, लिखके, याद करके ज्ञान प्राप्त करता है। जिसमें विद्यालय का, पुस्तकों का, शिक्षक का, अभिभावकों का उद्देश्य है। विद्यार्थियों का कोई उद्देश्य सिद्ध नहीं होता और विद्यार्थी परीक्षा के डर से परीक्षा देते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं। विद्यालय में विद्यार्थियों जो ज्ञान प्राप्त करता है, थोड़ा ज्यादा अनुभव होता है, मगर प्रत्यक्ष रूप में नहीं होता है। जब विद्यार्थियों विद्यालय में ज्ञान प्राप्त करता है, किताबों में दिया गया, संदर्भीय ज्ञान से हटकर वैसे का वैसे ही हासिल करता है। परिवेशीय संदर्भीय ज्ञान को पाठ्य पुस्तकीय ज्ञान से जोड़ नहीं पाते। विद्यालय में औपचारिक रूप से पूर्वनिर्धारित निश्चित ज्ञान ही प्राप्त करता है। जबकि, पूर्णरूप से आनेवाला संदर्भीय ज्ञान जिससे विद्यार्थियों नये ज्ञानका निर्माण करता है। यह ज्ञान पाठ्यपुस्तक में बहुत कम है। स्थानांतरित विद्यार्थियों का परिवेशीय संदर्भीय ज्ञान समुद्र के बारे में, मच्छी, बोट, समुद्री वनस्पति, समुद्री प्राणियों आदि

का ज्ञान ज्यादा है। यह ज्ञान स्वयं क्रिया करके, अनुभवों से, अनजाने में, मित्रों के साथ समुद्री किनारों पे खेलते वक्त देखके, अनुभूति से आता है और यह ज्ञान प्राप्त करते समय क्रिया द्वारा आनंद उठाता है। यह संदर्भीय ज्ञान से नये ज्ञान का निर्माण भी करता है। सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों अपने उद्देश्य से सिखता है और ज्ञान में निरंतर वृद्धि करता है। संदर्भीय ज्ञान निर्धारित एवं निश्चित नहीं है। जब स्थानांतरित विद्यार्थियों समुद्री परिवेश तथा अन्य विद्यार्थियों कृषिय परिवेश से यह संदर्भीय ज्ञान प्राप्त करता है जिसमें समाज का प्रभाव दिखाई दिया। जैसे कि स्थानांतरित विद्यार्थियों जब रेत में शिवलिंग का चित्र बनाके पास में पड़ा हुआ फूलों का हार शिवलिंग पर चढ़ाता है। यह क्रिया विद्यार्थियों परिवेश से सीखते है जिसमें विद्यार्थियों का आध्यात्मिक विकास होता है। दोनों विद्यार्थियों में संदर्भीय ज्ञान अनौपचारिक रूप से जो परिवेश से आता है, ज्ञान पूर्णरूप का है जिसमें अनुभवों का संकलन है।

दोनों प्रकार के विद्यार्थियों का पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान में कोई ज्यादा अंतर नहीं है। लेकिन स्थानांतरित विद्यार्थियों के पास परिवेशीय समुद्री के बारे में, मच्छी के बारे में आदि में तथा अन्य विद्यार्थियों में कृषि व्यवसाय से जुड़े हुये होने के कारण ज्यादातर विद्यार्थियों का कृषि संबंधी संदर्भीय ज्ञान ज्यादा है।

स्थानांतरित विद्यार्थियों में शरारत, साहसिकता, उत्साह, कार्य करने की उत्कंठा अन्य विद्यार्थियों से ज्यादा दिखाई दी इसी कारण अन्य विद्यार्थियों की तुलना में स्थानांतरित विद्यार्थियों पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान तथा संदर्भीय ज्ञान में श्रेष्ठ लगे। दोनों विद्यार्थियों की पारिवारिक, आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी नहीं है, फिर भी स्थानांतरित विद्यार्थियों की तुलना में अन्य विद्यार्थियों के पास खेत की जमीन होने के कारण पारिवारिक, आर्थिक

स्थिति तथा परिवार के अन्य सदस्यों का शैक्षिक अभ्यास अच्छा है। जैसे कि स्थानांतरित विद्यार्थियों 8वीं पास या नापास होकर विद्यालय छोड़कर अपने व्यवसाय में जूड़ जाते हैं। वहाँ अन्य विद्यार्थियों 10 या 12 वीं कक्षा तक पढ़ते हैं। अन्य विद्यार्थियों भी आगे शिक्षा प्राप्त नहीं करते। अध्ययन दौरान पता चला की शिक्षा प्राप्त करके आगे क्या बनना है। अभिभावकों जहाँ पर व्यवसाय या कार्य करता है, वहाँ तक ही लक्ष्य है जैसे कि एक विद्यार्थी ने कहा कि – पढ़ाई करके मुझे रीलायन्स कम्पनी में काम करना है जहाँ मेरे पिताजी कार्य करते है। स्थानांतरित विद्यार्थीयों परंपरा में मानने वाले, पर्यावरण एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक नहीं थे। लेकिन शरारती, उत्साही, सक्रिय एवं विश्वासु थे।

अध्ययन दौरान पाठ्यपुस्तकीय विभिन्न विषयों जैसे कि गुजराती, हिन्दी, गणित, विज्ञान आदि का पाठ्यक्रम का अध्ययन करने से पता चला कि ऐसे बहुत कम मुद्दे है जो स्थानांतरित विद्यार्थियों के पास समुद्री परिवेशीय पूर्णरूप का ज्ञान है। तथा अन्य विद्यार्थियों का कृषि संबंधी परीवशीय पूर्णरूप का ज्ञान है। विद्यार्थियों यह संदर्भीय ज्ञान को पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान के साथ जोड़ नहीं पाते। जैसे कि स्थानांतरित विद्यार्थियों का गुजराती विषय में एक या दो कविता या अध्याय ही अब तक सीखे हुए है। अन्य विद्यार्थियों का कृषि संबंधी ज्ञान में विज्ञान, समाजशास्त्र आदि में 1–2 अध्याय ही वर्तमान में पुस्तक द्वारा सीखते हैं और वो मुददे भी भिन्न–भिन्न विषयों में टुकड़ों के रूप में।

शोधकर्ता ने स्थानांतरित एवं अन्य विद्यार्थियों का पाठ्यपुस्तकीय तथा संदर्भीय ज्ञान का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाला। विद्यार्थियों आगे शिक्षा प्राप्त नहीं करते, इसका कारण क्या है? स्थानांतरित विद्यार्थियों डॉक्टर, इजनरे या प्रोफेसर क्यों नहीं बनते? साहसिकता तथा समुद्री ज्ञान

होने के बावजूद अभी तक एक भी विद्यार्थी क्यों मत्स्योद्योग तथा कोस्टगार्ड जैसे क्षेत्रों में नहीं है? अन्य विद्यार्थियों के पास कृषि संबंधी ज्ञान होने के बावजूद भी उन क्षेत्रों में आगे क्यों नहीं बढ़ते? ऐसे बहुत सारे प्रश्नों शोधकर्ता के मन में उठे है। ऐसे प्रश्नों को हल करना है तो इस क्षेत्र में और अध्ययन करने की बहुत आवश्यकता है। शोधकर्ता ने ऐसे कुछ प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया है। ऐसे प्रश्नों के लिये इस क्षेत्र में कौनसा अध्ययन करने की आवश्यकता है उनके बारे में निम्नांकित निर्देश दिये है।

5.8 भविष्य में शोध हेतु समस्याएँ :

प्रस्तुत शोधकार्य दौरान शोधकर्ता को इस समस्या के संदर्भ में आगे कुछ अध्ययन हो सकता है इसके बारे में शोधकर्ता के मन में कुछ इस क्षेत्र संबंधित प्रश्नों हैं जो निम्नांकित हैः-

1. पाठ्यपुस्तकीय तथा संदर्भीय ज्ञान के बारे में देखें तो पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान निर्धारित, ज्ञान के टूकड़ों के रूप में विभिन्न विषयों में निश्चित है। जबकि संदर्भीय ज्ञान की कोई सीमाएँ नहीं हैं, पूर्णरूप से, आस-पास के परिवशे से वो ज्ञान प्राप्त होता है। विभिन्न कक्षाओं के, विभिन्न जातियों के, विभिन्न परिवेश से आनेवाले विद्यार्थियों के इन दोनों प्रकार के ज्ञान में समानता है? अंतर है? यह जानने के लिए अध्ययन की आवश्यकता है।
2. विद्यार्थियों विद्यालय में और परिवेश में से कैसे सीखते हैं? ऐसा कौनसा ज्ञान प्राप्त करता हैं, जो विद्यार्थियों का सर्वागीण विकास करता है? इस संदर्भ में अध्ययन आवश्यक है।
3. विद्यार्थियों का संदर्भीय ज्ञान विद्यालयों में कैसे आता हैं। क्या शिक्षक उन परिवेश से हैं? शिक्षक परिवेश से प्रशिक्षित है? जो विद्यार्थियों के परिवेश के बारे में जानता हो और विद्यार्थियों की इन संदर्भीय

ज्ञान जानने की जिज्ञासा को परिपूर्ण करें? इस संदर्भ में अध्ययन करना अति आवश्यक है।

4. विभिन्न स्तर से, विभिन्न कक्षा से, विभिन्न परिवेश से आनेवाले विद्यार्थियों जो विद्यालय के अलावा परिवार, समुदाय, समव्यस्क समूह से ज्ञान प्राप्त करता है। उनका उपयोग विद्यालयों में या अपने सर्वांगीण विकास के लिये कर सकता है? अध्ययन करना जरूरी है।

5. विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया के संदर्भ में विद्यालय से आनेवाला ज्ञान जो विद्यालय में सुनके, रटके, याद करके या लिखके प्राप्त करता है। जिसमें विद्यालय का, पुस्तकों का, शिक्षक का, अभिभावकों का उद्देश्य है। परंपरागत ज्ञान प्राप्त करता है। विद्यार्थियों स्वयं करके, आनंद के साथ ज्ञान को प्राप्त अपने परिवेश से करता है। जिनमें विद्यार्थियों का खुद का उद्देश्य होता है और नये ज्ञान का निर्माण करता है। क्या विद्यार्थियों की इन दोनों प्रकार के ज्ञान निर्माण एवं सीखने की प्रक्रिया के बारे में ओर अध्ययन की आवश्यकता नहीं है?

6. स्थानांतरित विद्यार्थियों का संदर्भीय ज्ञान में रेत में चित्र बनाना, शिवलिंग पर फूलहार चढ़ाना आदि ज्ञान में कल्पनाशीलता तथा सामाजिक प्रभाव दिखाई देता है। विद्यार्थियों की इन कल्पनाशीलता को प्रोत्साहित करके इस ज्ञान को विद्यालय में लाना जरूरी है। अतः कह सकते हैं कि विद्यार्थियों का परिवेशीय ज्ञान को विद्यालय में हम कितना प्रोत्साहित कर सकते हैं? पाठ्यपुस्तक के साथ इन ज्ञान को जोड़ सकते हैं? इस संदर्भ में अध्ययन आवश्यक है।

7. संदर्भीय ज्ञान का स्वरूप संकुचित है जैसे कि स्थानांतरित विद्यार्थियों का समुद्री परिवेशीय ज्ञान तथा अन्य विद्यार्थियों का कृषि संबंधी ज्ञान

जो विभिन्न व्यवसायों को सीमित करता है। पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करके विद्यार्थियों डॉक्टर, इंजनियर, प्रोफेसर बनते हैं। जबकि, संदर्भीय ज्ञान इन व्यवसायों को सीमित करता है जैसे कि स्थानांतरित विद्यार्थियों का यह व्यवसाय समाज में विशिष्टता की ओर (Vertical Mobility) ले जाता है। विभिन्न जाति के विद्यार्थियों का इन संदर्भीय ज्ञान से जुड़ा हुआ व्यवसाय का विकास करना अत्यंत जरूरी है। शिक्षा में इस संदर्भीय ज्ञान को पाठ्यपुस्तक में कहाँ तक जोड़े जाते हैं? अध्ययन की आवश्यकता है।

8. स्थानांतरित विद्यार्थियों के पास समुद्री परिवेशीय ज्ञान ज्यादा होने के बावजूद भी यह विद्यार्थियों आज तक क्यों पोर्ट, मत्स्य उद्योग एवं कोस्टगार्ड जैसे क्षेत्रों में आगे नहीं बढ़े? इस संदर्भ में अध्ययन आवश्यक है।

9. पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान एवं संदर्भीय ज्ञान में क्या अंतर है? दोनों प्रकार के ज्ञान की प्रकृति तथा स्वाभाव क्या है? कौनसा ज्ञान ज्यादा श्रेष्ठ है? विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिये संदर्भीय ज्ञान कितना जरूरी है? यह जानना आज की शिक्षा में अत्यंत आवश्यक है।

10. एक ही कक्षा में भिन्न-भिन्न परिवेश में से आनेवाले विद्यार्थियों पाठ्यक्रम के साथ समायोजन कर सकते है? किस प्रकार से पाठ्यक्रम निर्माण किया जाय ताकि सभी विद्यार्थियों को इसका पूरा फायदा मिले यह अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है।